ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-७२
दिनांक- शुक्रवार, ३० सितम्बर, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.5 एवं 24.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 93 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 73 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 3.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.1 एवं दोपहर में 37.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में वर्षा नहीं हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(01–05 अक्टूबर, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 01–05 अक्टूबर, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान अवधि में कम दबाब के क्षेत्र के बनने के कारण मौसम में बदलाव होने की सम्भावना है जिसके कारण आसमान में मध्यम बादल देखे जा सकते है। इसके प्रभाव से 3–4 अक्टुबर को उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने की सम्भावना है। कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी हो सकती है। तराई के कुछ जिलों में जैसे मधुबनी एंव सीतामढ़ी जिलो में मध्यम से भारी वर्षा भी हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10–12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिनों तक पछिया हवा उसके बाद पूरवा हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- 3–4 अक्टुबर को वर्षा के सम्भावना को देखते हुए किसान भाई कृषी कार्य में सावधानी बरतें।
- किसान भाई रवी फसलों की बुआई पूर्व खेतों, खेत से सटे मेड़ों, नालों एवं आस–पास के रास्तों में उगे अवांछित जंगलो की साफ–सफाई प्राथमिकता से करे। ताकि इन जंगलों में छिपे कीट व रोगों के कारक आदी सम्पूर्ण रुप से नष्ट हो जाए। फसलों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी–गली गोबर खाद का प्रबंध करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है।
- धान की फसल जो गाभा की अवस्था में हों, उसमें सिंचाई कर प्रति हेक्टेयर 30 किलोग्राम नेत्रजन का उपरिवेषन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक–एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल 10 प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर 10–15 किलोग्राम की दर से भूरकाव 8 बजे सुबह से पहले अथवा 5 बजे शाम के बाद बालियों पर करें। खेतों के आस–पास के मेड़ों पर दवा का भूरकाव मौसम साफ रहने पर करें।
- मिर्च की फसल में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे, तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मि0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- अगात रबी फसल के लिए खेत की तैयारी शुरु करें। फसलों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी–गली गोबर खाद का प्रबंध करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है।
- फूलगोभी की पूसा अगहनी,पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक–1, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काषी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोवॉल आदि किस्मों की रोपाई करे। फूलगोभी की पिछात किस्मो जैसे माघी, स्नोकिंग, पूसा स्नोकिंग–1, पूसा–2, पूसा स्नोवॉल–16, पूसा स्नोवॉल के–1 की नर्सरी में बुआई के लिए खेत की तैयारी शुरु करें। पत्तागोभी की प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पुसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्मों की बुआई नर्सरी में करें।
- सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का 0.3 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- बैगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। शुरुवाती रोक–थाम के लिए बैगन की रोपाई के 10–15 दिनों बाद 1 ग्राम फ्युराडान 3 जी0 दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला दें। खड़ी फसल में इस कीट का आक्रमण होने पर कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 ई0सी0/1 मि0ली0 प्रति 4 लीटर पानी या क्वीनालफॉस 25 ई0सी0 दवा का 1.5 मि0मी0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव मौसम साफ रहने पर करे।

आज का अधिकतम तापमानः 34.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 24.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.4 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी